श्री शत्रुंजय - मुक्ति सम्यग्ज्ञान अभ्यासक्रम

द्वितीय वर्ष - अभ्यास - ६

प्रश्न - पत्र

नवंबर 2021

गुणांक - १००

सूचना : १. नाम और एनरोलमेंट नंबर बिना का पेपर रद्द किया जायेगा । २. लाल स्याही के पेन का उपयोग न करें । ३. समझ में न आये ऐसे अक्षरों वाले जवाब पत्र जांचे नहीं जायेंगे । ४. जवाब पत्र में ही योग्य खाने में जवाब लिखना है, साथ में दूसरा पेपर जोडना नहीं है, जोडने पर तीन मार्क्स काट लिये जायेंगे । ५. जवाब पत्र हर महिने की ता. २५ तक भेजना जरुरी है, आगे-पीछे आए पेपर जांचे नही जायेंगे । ६. सभी जवाब अभ्यासक्रम के आधार पर ही लिखना है । ७. जिस महिने का प्रश्न पत्र है, उसके बाद के महिने की २५ ता. को आपके मार्क्स तथा सही उत्तर इन्टरनेट पर दे दिये जायेंगें, उसके बाद आए हुये उत्तर पत्र स्वीकृत नहीं होंगे तथा फोन पर जवाब नहीं दिया जायेगा । ८. उत्तर पत्र में अभ्यासक्रम का नंबर लिखना जरुरी है ।

प्रश्न नं. १ रिक्त स्थान की पूर्ति करो - २०

१. ..... साधु, साध्वीजी भगवंत को करते है ।
२. मैं दिन के समय में ..... का पालन करूंगा ।
३. नरक में तो अतिशय दुःख होने से वंहा से जल्दी छूटने के भाव जीव को होते है, इसलिये..... कही है ।
४. किसी से भी पराजय नहीं पाये हुए देवाधिदेव..... प्रभु को मैं तत्परता पूर्वक प्रणाम करता हुं ।
५. यदि भोग और उपभोग पर हमारा..... न हो तो हम पशु से भी बदतर जीवन जी रहे है ।
६. .....को पश्चिम दिशा में द्वार न होने से पूर्व,उत्तर, दक्षिण तीन दिशाओ में तीन द्वार पर एक-एक चौमुखजी स्थित है ।
७. अस्थिर, अशुभ, दौर्भाग्य, दुःस्वर, अनादेय और अपयश ये छः प्रकृतिया..... कहलाती है ।
८. इन वेदपदो का अर्थ इंद्र, यम, वरुण, कुबेर वगैरह..... देवो को कौन जानता है ।
९. मैं सात व्यसन, बावीस अभक्ष्य, बतीस अनंतकाय तथा पन्द्रह ..... का त्याग करता हूं ।
१०. काल की अपेक्षा से कम हो जाय वह..... आयुष्य कहलाता है ।
११. ..... रहित आत्मा सर्व व्यापक है, वो पुण्यपाप कर्म में बंधता नही है ।
१२. श्रावक को प्रथम उत्कृष्ट से तो प्रासूक शुद्धमान निरवद्य आहार लेना चाहिये परंतु यदि ऐसा नहीं ले पा रहे हो तो भी ..... तो अवश्य बनना चाहिये ।
१३. रुक्मि और..... इन दोनों वर्षधर पर्वत पर आठ-आठ शिखर है ।
१४. उनके आसन ग्रहण करने के पश्चात ही उनके सामने..... बैठना चाहिये ।
१५. मैं प्रतिदिन..... के तपस्वीयों की अनुमोदना करने एक रुखी रोटी जरुर खाऊंगा ।
१६. गुरु के ..... की बात खुद विस्तार से बताये, अपनी चतुराई बताये तो भी गुरु की आशातना होती है ।
१७. मंडित स्वामी ने सर्वश्रेष्ठ..... संघयण वाला शरीर पाया था ।
१८. मै शान्ति आदि के लिये..... दवा नहीं वापरुंगा ।
१९. ..... की आलोचना गुरु से पहले ले तो आशातना समझना ।
२०. उसकी स्थिति का अपवर्तन होता है, थोडे समय में भोग सके परंतु..... तो होती ही नहीं ।

प्रश्न नं. २ एक शब्द में जवाब लिखो - १५

१. देवगति के किसी भी एक भव में जन्म से मरण तक टिकाये रखने वाला कर्म कौनसा ?
२. जिन्हें खाने से तृप्ति भी नहीं होती परतु आरंभ व प्रसंगदोष भी बहुत लगे वह क्या कहलाते है ?
३. भगवान महावीर की ही हाजिरी में मोक्ष में जाने वाले गणधर कौनसे ?
४. सभी इकसठ पर्वतो के अंतिम शिखर क्या कहलाते है ?
५. त्रस, बादर, पर्याप्त और प्रत्येक इन चारो प्रकृतियो का समावेश किसमें होता है ?
६. कलह की कालिमा से रहित कौनसे प्रभु है ?
७. द्रव्यवंदन से ज्यादा लाभदायक क्या है ?
८. झाड की गांठ से गोंद उखाडकर तत्काल खाने पर कौनसा अतिचार लगता है ?
९. वे वेदपद देवो की भी किस बात को सूचित करते है ?
१०. जिनके भेद, उपभेद नहीं होते वे प्रकृतियां क्या कहलाती है ?
११. गुरुवंदन करने से प्राणी क्या क्षय करता है ?
१२. मांस, मदिरा, लहसुन, प्याज कौनसा आहार कहलाता है ?
१३. कौनसी अवस्थावाला जीव कर्म से बंधता है ?
१४. कौनसा कर्म जीव को भव में पकडकर रखता हैं ?
१५. अपनी उपस्थिति तथा कंठस्थ विद्या से सभाजनो को कौन मंत्रमुग्ध कर देता था ?

प्रश्न नं. ३ नीचे दिये गये शब्दों के अर्थ लिखो - १०

१) इगसट्ठी २) ति-नवइ ३) अन्नावि ४) कूडाई ५) अयवुज्जोयं ६) अइरुग्गय ७) मोअं ८) तिग ९) अणहं १०) फास ११) चित्तिसमं

प्रश्न नं. ४ जोडियाँ लगाओ (सिर्फ 'B' के नंबर लिखो) - १०

A	B	A	B
१) मौर्यपुत्र	१) वशिष्ठ	६) विकथा	६) रोहिणी
२) पुण्यप्रकृति	२) अभक्ष्य	७) मंडित स्वामी	७) शुभ
३) त्रस षट्क	३) बलकूट	८) आनुपूर्वी	८) अजितनाथ प्रभु
४) कर्मरहित	४) पिंड प्रकृति	९) अफीम	९) श्रीसंघ
५) फेटावंदन	५) आशातना	१०) मेरुपर्वत	१०) तिर्यंचायुकर्म

प्रश्न नं. ५ निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संख्या में लिखो - १०

१. कितने प्रहर गुजरने के बाद दही, छाछ अभक्ष्य बन जाते है ?
२. मौर्यपुत्र स्वामी को किस उम्र में केवलज्ञान प्राप्त हुआ ?
३. भेद, उपभेद रहित प्रकृतियां कितनी है ?
४. सिद्धायतन में कुल कितने प्रतिमाजी होते है ?
५. गुरु से कितने हाथ अवग्रह क्षेत्र से बाहर रहकर देशना सुननी चाहिये ?
६. शास्त्रो में गुरु की कितनी आशातनाये बतायी गयी है ?
७. हम हर समय कितने कर्म बांधते है ?
८. श्रीकृष्ण महाराजा ने वंदन करके कितने नरक का आयुष्य कम किया ?
९. कितने शिखर सुवर्णमय है ?
१०. नामकर्म के अधिकतम भेद कितने होते है ?

प्रश्न नं. ६ नीचे के वाक्य सही (✓) हैं या गलत (×) बताओ - १०

१. आहार, पानी की निमंत्रणा प्रथम अन्य साधुओ को करे फिर गुरु को करे तो आशातना लगती है ।
२. पांच तिथि, पर्युषण पर्व, आयंबिल की ओळी वगैरह पर्व दरम्यान संपूर्ण ब्रह्मचर्य का पालन करना चाहिये ।
३. चुतर्विध संघ के प्रवर्तक, मोहनीय वगैरह कर्मो से सहित ऐसे श्रीशांतिनाथ प्रभु है ।
४. इस तरह एकसठ पर्वतो पर कुल मिलाकर कूटों की संख्या चार सौ अडसठ होती है ।
५. अनपर्वतनीय यानि काल की अपेक्षा से कम हो सके ऐसा ।
६. दुःपक्वोषधि के अन्तर्गत कुछ कच्चे, कुछ पक्के ऐस हरे चने, पोंक, उंबी, ज्वार के पोक इत्यादि आते है ।
७. सूक्ष्म अपर्याप्त और साधारण इन तीन प्रकृतीयो को स्थिर त्रिक कहते है ।
८. भाव से वंदन करने से तीनो मुनि केवलज्ञान प्राप्त करते है ।
९. देवताओ को प्रत्यक्ष देखकर मंडित स्वामी की महावीर पर श्रद्धा दृढ हो गयी ।
१०. विद्युत्प्रभ निषध और माल्यवंत इन हरेक पर्वतपर आठ-आठ शिखर है ।

प्रश्न नं. ७ नीचे के वाक्य किस पृष्ठ पर है वह पृष्ठ नंबर लिखो - १०

१. इसलिये उन्हें अलग न गिनकर अगर पांच शरीर में ही समा लिये जाय तो ये बीस प्रकृतियाँ कम होती है ।
२. मैं शौक की खातिर सेंट, अत्तर आदि सुगंधी पदार्थ वापरुंगा नहीं ।
३. गुरु के आगे खडे रहने से दर्शन करने में अंतराय हो तो आशातना होगी ।
४. गगन रुपी आंगन में विचरण करते एकत्रित हुए चारण मुनिओं से मस्तक द्वारा वंदन किये गये ।
५. वेदपदों में जो मायासमान देवो को बताने में आया है, वो देव नित्य देव के रुप में रहने वाले नहीं है ।
६. अनेक पापस्थानको से अपने जीवन को मलिन बनाता है ।
७. उस पर्वत पर अधिष्ठायक देव, देवियों के समचौरस प्रासाद होते है ।
८. जो प्रकृति कही हो उससे लेकर जितनी संज्ञा हो उतनी प्रकृतियां जानना ।
९. ये चौदह नियम सुबह में दिवस के लिये एवं शाम को रात्रि के लिये धार कर प्रतिज्ञा लेकर प्रतिदिन पालना चाहिये ।
१०. दूसरो को वे सम्यग् दर्शन, ज्ञान, चारित्र में लीन कराकर कर्म से मुक्त भी कराते है ।

प्रश्न नं. ८ अपनी भाषा में समझाओ - १५

१. श्रीमंडितस्वामी की शंका का समाधान प्रभु ने कैसे किया ? २) भोग, उपभोग पर नियंत्रण न होने पर क्या होता है ।
३. गुरुवंदन के लाभ बताईये ४) सिद्धायातन का वर्णन कीजिये ? ५) आयुष्य कर्म की विचित्रताये बताईये ?

उत्तर पत्र नीचे लिखे पते पर भेजिए :
शत्रुंजय अेकेडमी श्री पद्मप्रभस्वामी जैन मंदिर, स्टेशन रोड, चालिसगाँव - ४२४१०१ जिल्हा : जलगांव,
मो. ९०२८२४२४८४. सही परिणाम और सही जवाब के लिये वेब साईट www.shatrunjayacademy.com